Dr. Shambhunath Singh

Dr. Shambhunath Singh enriched the Post CHHAYAVAD Hindi literature through his multidimensional creative vision. His literary works reflect the struggle arising out of the conflicts among the social and cultural ethos, inherent in society. His prolonged fifty years literary career was solely aimed at Integral Humanism.

Born on 17 June 1916 at Rawatpar Amethian village in Deoria district of eastern Uttar Pradesh as the middle son of Thakur Ram Dev Singh, Late Dr. Shambhunath Singh started his poetic career at the tender age of 13 years in 1930. By the year 1940, his poetic abilities were noticed by all. In the meantime, on arrival of Mahatma Gandhi at Kashi in 1934, on an evening in Prarthana Sabha, he presented him the poem titled "Harijan" which was framed in glass. It got instantly auctioned by Bapu and a sum of Rs. 50 was received in Harijan fund. In 1938, as a student of Allahabad University, during the golden jubilee celebrations, he was invited to participate in a "Kavi Sammelan" where his poem "Krishak Bala" was widely appreciated. His genius and talents drew the attention of Late Smt. Mahadevi Verma and Dr. Ram Kumar Verma. He came in close contacts with them and got their blessings.

His poetic talents were further refined even after the year 1940. His poetry collections "Roop Rashmi" and "Chhaya lok" were published during the year 1940 to 1945. His famous poetry "Samay Ki Shila Par" was published in 1944. Dr. Shambhunath Singh wrote about grass root realities of Indian society which got published later on, as collection of poems like "Udayachal" and "Manvantar". Depicting the social and economic conditions of Indian rural life, he published the collection of his poems in "Diva Lok", "Maadhyam Main" and "Khandit Setu" after the year 1950.

"Maadhyam Main" and "Khandit Setu" are the collections of neo - Hindi poetry written by him, but due to his deep love and affection for Indian national and cultural consciousness he did not like the imported modernity of neo Hindi poetry. Therefore, he invented a new cult in Hindi poetic traditions, namely, the "Nav Geet".

During the 50 years of his literary career from 1940 to 1990, apart from the publications of his eleven collections of poetry he published many valuable research works and treatises too, such as "Hindi Mahakavya kaa Swaroop Vikas", "Goswami Tulasi Das Jeevan aur Vyaktitwa", "Chhayawaad Yug", "Prayog Vaad aur Nai Kavita", "Moolya aur Uplabdhi", "Hindi Kavya kee Samajik Bhoomika", "Hindi Alochana ke Jyoti Stambha", "Vaidik Jaati Ka Nivas Sthan", "Bhartiya Sanskriti ka Swaroop" and "Samkaleen Hindi Kavita ka Pariprekshya va Navgeet" etc. With publications of "Dharatee aur Aakash", "Akela Shahar", "Adrishya Champa" and "Deewar kee Wapasee" he successfully introduced the experiment of absurd drama in Hindi writing.

His invaluable works on review, research, drama, essay and stories have glorified and immensely enriched the contemporary Hindi literature. He continuously kept himself abreast of the changes that were taking place in the circles of Hindi poetry. After the decline of Chhaya Vaad, he associated himself with the developing streams of Hindi poetry like Yatharthvaad, Prayogvaad, Pragativaad, Neo Poetry and Nav Geet.

The renowned critic Dr. Prabhakar Machave has described him as "Prince of Songs". Folk culture, society, nature, love and sensitivity are the central themes in the poetry of Dr. Shambhunath Singh and through its pursuance he established himself as the exponent of modernity and elevator of Indian cultural consciousness. Deeply engrossed in his relentless literary pursuits, he breathed his last on 3rd September 1991 in Varanasi.

Department of Posts is pleased to issue a Commemorative Postage Stamp on Dr. Shambhunath Singh.

Credits:-

Text : Based on the material received from proponent

Stamp / FDC/Brochure : Smt. Alka Sharma

Cancellation Cachet

भारतीय डाक विभाग
DEPARTMENT OF POSTS
INDIA



डॉ. शम्भुनाथ सिंह
DR. SHAMBHUNATH SINGH

विवरणिका
BROCHURE

डॉ. शम्भुनाथ सिंह

डॉ. शम्भुनाथ सिंह ने अपने बहुआयामी सृजनात्मक लेखन के माध्यम से छायावादोत्तर हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया। उनकी साहित्यिक रचनाओं में समाज में निहित सामाजिक और सांस्कृतिक संघर्ष प्रतिबिम्बित होता है। उनकी 50 वर्ष की लंबी साहित्यिक यात्रा का एकमात्र लक्ष्य एकात्म मानववाद ही है।

17 जून 1916 को पूर्वी उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले के ग्राम रावतपार अमेठिया में ठाकुर रामदेव सिंह के मंझले पुत्र के रूप में जन्मे स्वर्गीय डॉ. शम्भुनाथ सिंह ने वर्ष 1930 में 13 वर्ष की अल्पायु से ही काव्य रचना शुरू कर दी थी। सन 1940 से ही उनकी काव्य प्रतिभा को सब लोग जान चुके थे। इस बीच, सन 1934 में महात्मा गांधी के काशी आगमन के समय उन्होंने 'हरिजन' शीर्षक कविता लिखी और उसे छपवाकर तथा शीशे में मढ़वाकर संध्या समय प्रार्थना सभा में बापू को भेंट की। इसे बापू ने उसी समय नीलाम कर दिया, जिससे हरिजन फण्ड में 50 रु. की प्राप्ति हुई। सन 1938 में, जब वे इलाहाबाद विश्वविद्यालय के छात्र थे, उन्हें विश्वविद्यालय के स्वर्ण जयन्ती समारोह में आयोजित 'कवि सम्मेलन' में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया, जहां उनकी 'कृषक बाला' नामक कविता की काफी प्रशंसा की गई। उनकी काव्य प्रतिभा और प्रवीणता ने श्रीमती महादेवी वर्मा एवं डॉ. रामकुमार वर्मा का ध्यान आकर्षित किया और उन्हें उनका सानिध्य व आशीर्वाद मिला।

उनकी काव्य प्रतिभा सन 1940 के बाद उत्तरोत्तर प्रखर होती गई। उनके काव्य संग्रह ''रूप-रश्मि'' और ''छायालोक'' वर्ष 1940 से 1945 के दौरान प्रकाशित हुए। सन 1944 में उनकी प्रसिद्ध कविता "समय की शिला पर" प्रकाशित हुई। डॉ. शम्भुनाथ सिंह ने भारतीय समाज के यथार्थ से संबंधित रचनाएं लिखीं, जो कालान्तर में "उदयाचल'' और "मन्वन्तर'' जैसे काव्य-संकलन के रूप में प्रकाशित हुई। उन्होंने वर्ष 1950 के बाद भारतीय ग्रामीण जीवन की सामाजिक और आर्थिक स्थितियों का चित्रण करते हुए, "दिवा लोक", "माध्यम मैं" और "खंडित सेतु" नामक काव्य- संग्रह प्रकाशित किए।

"माध्यम मैं" और "खण्डित सेतु" उनके द्वारा लिखित नई-हिन्दी कविता के संग्रह हैं, किन्तु भारतीयता और राष्ट्र की सांस्कृतिक चेतना के प्रति उत्कट अनुराग होने के कारण, उन्हें नई हिन्दी कविता की आयातित आधुनिकता रास नहीं आई। इसलिए, उन्होंने हिन्दी काव्यात्मक परंपरा में एक नई धारा अर्थात "नव गीत" की शुरुआत की।

सन 1940 से सन 1990 तक के 50 वर्षों के अपने साहित्यक जीवन के दौरान उन्होंने 11 काव्य संकलनों के अतिरिक्त, अपने शोध कार्यों और समीक्षा ग्रंथों जैसे "हिन्दी महाकाव्य का स्वरूप-विकास", "गोस्वामी तुलसीदास जीवन और व्यक्तित्व", "छायावाद युग", "प्रयोगवाद और नई कविता", "मूल्य और उपलब्धि", "हिन्दी काव्य की सामाजिक भूमिका", "हिन्दी आलोचना के ज्योति स्तम्भ", "वैदिक जाति का निवास स्थान", "भारतीय संस्कृति का स्वरूप" और "समकालीन हिन्दी कविता का परिप्रेक्ष्य व नवगीत" आदि का प्रकाशन किया। हिन्दी नाट्य लेखन के क्षेत्र में उन्होंने एब्सर्ड ड्रामा लेखन का प्रयोग शुरू किया, जो पूर्णतया सफल रहा। इस क्षेत्र में उन्होंने "धरती और आकाश", "अकेला शहर", "अदृश्य चम्पा" और "दीवार की वापसी" आदि कृतियों का सृजन व प्रकाशन किया।

समीक्षा, शोध, नाटक, निबन्ध और कहानी के क्षेत्र में उन्होंने जो अमूल्य ग्रन्थ लिखे उससे समसामयिक हिन्दी साहित्य गौरवान्वित और अत्यधिक समृद्ध हुआ। अपने जीवन काल में उन्होंने हिन्दी कविता में निरन्तर होने वाले परिवर्तनों के प्रति जागरुकता दिखाई। छायावाद युग की समाप्ति के बाद, वे हिन्दी कविता की यथार्थवाद, प्रयोगवाद, प्रगतिवाद, नई कविता और नवगीत जैसी विकासशील धारा के साथ जुड़े रहे।

प्रख्यात समालोचक डॉ. प्रभाकर माचवे ने उन्हें "गीतों का राजकुमार" कहा। डॉ. शम्भुनाथ सिंह ने लोक-संस्कृति, समाज, प्रकृति, प्रेम व संवेदना को अपनी कविता का मुख्य विषय बनाया और इस क्षेत्र में लगातार आगे बढ़ते हुए, वे आधुनिकता के व्याख्याता और भारतीय सांस्कृतिक चेतना के उन्नायक के रूप में प्रतिष्ठित हुए। साहित्य की अविराम सर्जना करते हुए, उन्होंने 03 सितंबर, 1991 को वाराणसी में अन्तिम सांस ली।

डाक विभाग, डॉ. शम्भुनाथ सिंह पर एक स्मारक डाक-टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार:-

मूलपाठ	:	प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई सामग्री पर आधारित
डाक टिकट/प्रथम दिवस आवरण/: विवरणिका/विरूपण		श्रीमती अलका शर्मा

भारतीय डाक
India Post

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग	:	500 पैसा
Denomination	:	500 p
मुद्रित डाक टिकटें	:	5.0 लाख
Stamps Printed	:	5.0 lakh
मुद्रण प्रक्रिया	:	वेट ऑफसेट
Printing Process	:	Wet Offset
मुद्रक	:	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद
Printer	:	Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00